International Research Journal of Human Resource and Social Sciences
ISSN(O): (2349-4085) ISSN(P): (2394-4218)
Impact Factor 6.924 Volume 8, Issue 09, September 2021
Website- www.aarf.asia, Email : editoraarf@gmail.com

संगम कालीन दक्षिण भारत एवं रोमन साम्राज्य के मध्य समुद्री व्यापारिक संबंध: एक आर्थिक विश्लेषण

डॉ० प्रीतम कुमार
असिस्टेंट प्रोफेसर , प्राचीन इतिहास विभाग
काशी नरेश राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय ज्ञानपुर,भदोही ।

सारांश :

प्रस्तुत शोध पत्र संगम कालीन दक्षिण भारत और रोमन साम्राज्य के बीच विकसित समुद्री व्यापारिक संबंधों का सूक्ष्म परीक्षण करता है। ईसा पूर्व प्रथम शताब्दी से ईसा की तीसरी शताब्दी तक का काल हिंद महासागर के व्यापारिक इतिहास में एक स्वर्णिम युग था। यह शोध पत्र पुरातात्विक साक्ष्यों (जैसे अरिकामेडु की खुदाई), संगम साहित्य और विदेशी वृत्तांतों (पेरिप्लस ऑफ द एरिथ्रियन सी) के आधार पर व्यापार की प्रकृति, विनिमय की वस्तुओं और भारतीय अर्थव्यवस्था पर इसके प्रभाव का विश्लेषण करता है।

मुख्य शब्द (Keywords):

संगम काल, रोमन व्यापार, समुद्री मार्ग, अरिकामेडु, यवन, व्यापारिक संतुलन, मुज़िरिस।

प्रस्तावना

प्राचीन काल में भारत का समुद्री व्यापार केवल वस्तुओं का आदान-प्रदान नहीं था, बल्कि यह संस्कृतियों का मिलन बिंदु था। संगम युग (300 ई.पू. - 300 ईस्वी) के दौरान दक्षिण भारत के तीन प्रमुख राजवंशों—चोल, चेर और पांड्य—ने विदेशी व्यापार को अत्यधिक प्रोत्साहन दिया। मानसून की खोज (हिप्पोलस द्वारा) ने लंबी दूरी के समुद्री सफर को सुगम बना दिया, जिससे रोम और भारत के बीच सीधे व्यापारिक मार्ग खुल गए।

© Association of Academic Researchers and Faculties (AARF)
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

व्यापारिक मार्ग और प्रमुख बंदरगाह (Trade Routes and Ports)

रोमन जहाज लाल सागर से होते हुए अरब सागर पार कर भारतीय तटों पर पहुँचते थे।

- **पश्चिमी तट:** मुज़िरिस (Muziris), जो चेर साम्राज्य का प्रमुख केंद्र था, रोमनों के लिए 'मसालों का बाजार' कहलाता था।
- **पूर्वी तट:** अरिकामेडु (पुडुचेरी के पास) एक महत्वपूर्ण व्यापारिक केंद्र था जहाँ रोमन बस्तियों के प्रमाण मिले हैं। इसके अलावा पुहार (कावेरीपट्टनम) और कोरकई अन्य महत्वपूर्ण बंदरगाह थे।

आयात-निर्यात की वस्तुएं

व्यापार का संतुलन भारत के पक्ष में था। रोम को विलासिता की वस्तुओं की भारी आवश्यकता थी।

- **भारत से रोम को होने वाला निर्यात (Exports from India)**

संगम कालीन भारत से निर्यात होने वाली वस्तुएं मुख्य रूप से विलासिता (Luxury) और उच्च मूल्य वाली थीं, जिन्होंने रोमन कुलीन वर्ग के जीवन को गहराई से प्रभावित किया था।

1. मसालों का राजा: काली मिर्च (Black Gold)

दक्षिण भारत, विशेषकर चेर साम्राज्य (आधुनिक केरल) से होने वाले निर्यात में काली मिर्च का स्थान सर्वोपरि था। रोमन इसे 'यवनप्रिय' कहते थे क्योंकि यह उनके भोजन संरक्षण और स्वाद के लिए अनिवार्य थी। रोमन व्यंजनों की प्रसिद्ध पुस्तक एपिकियस (Apicius) की अधिकांश रेसिपीज में भारतीय काली मिर्च का उल्लेख मिलता है। अलारिक (Alaric the Goth) ने जब 410 ईस्वी में रोम पर घेरा डाला था, तो उसने फिरौती के रूप में 3000 पाउंड भारतीय काली मिर्च की मांग की थी, जो इसकी कीमत और महत्ता को दर्शाता है। काली मिर्च के अलावा इलायची, दालचीनी और हल्दी का भी भारी मात्रा में निर्यात होता था।

2. वस्त्र और मलमल (Textiles and Muslin)

चोल साम्राज्य और पांड्य बंदरगाहों से बेहतरीन गुणवत्ता वाले सूती कपड़ों और मलमल का निर्यात किया जाता था। रोमन महिलाएं भारतीय मलमल की इतनी दीवानी थीं कि वे इसे 'वेंटस टेक्सटाइलिस' (बुनी हुई हवा) कहती थीं। संगम साहित्य में इन कपड़ों की तुलना 'सांप की केंचुल' और 'धुएं के बादल' से की गई है।

© Association of Academic Researchers and Faculties (AARF)

रोमन सम्राटों ने कई बार इन पारदर्शी कपड़ों पर प्रतिबंध लगाने की कोशिश की क्योंकि इनका आयात रोम की नैतिकता और अर्थव्यवस्था दोनों के लिए चुनौती बन गया था।

3. रत्न, मोती और कीमती धातुएं

पांड्य साम्राज्य के 'कोरकई' बंदरगाह से निकले मोती पूरी दुनिया में प्रसिद्ध थे। रोमन रानियां इन मोतियों को अपने आभूषणों और यहाँ तक कि जूतों में भी जड़वाती थीं। इसके अलावा, दक्षिण भारत की खानों से प्राप्त नीलम (Sapphire), माणिक्य (Ruby), वैदूर्य (Beryl) और कुरुविंद का निर्यात बड़े पैमाने पर होता था। विशेष रूप से 'कोडुमनाल' जैसे केंद्रों से प्राप्त अर्ध-कीमती पत्थरों की रोम के बाजारों में भारी मांग थी।

4. वन्यजीव और सुगंधित पदार्थ

रोमन कोलोसियम के खेलों के लिए भारत से शेर, बाघ और हाथियों का निर्यात किया जाता था। इसके अतिरिक्त, हाथीदांत की बनी कलाकृतियां, मोर के पंख, चंदन की लकड़ी, जटामांसी और इत्र का भी निर्यात होता था।

- **रोम से भारत होने वाला आयात (Imports from Rome)**

रोम से भारत आने वाली वस्तुएं मुख्य रूप से विनिमय के माध्यम और उच्च वर्ग की उपभोग की वस्तुएं थीं।

1. स्वर्ण और रजत मुद्राएं (Denarius and Aureus)

रोम के पास भारत को देने के लिए विनिमय हेतु पर्याप्त सामान नहीं था, इसलिए वे मुख्य रूप से सोने और चांदी के सिक्कों में भुगतान करते थे। दक्षिण भारत के कोयम्बटूर, मदुरै और अन्य क्षेत्रों में हजारों की संख्या में मिले रोमन सिक्के (जैसे ऑगस्टस और नीरो के काल के) इस बात का प्रमाण हैं। प्लिनी के अनुसार, भारत हर साल रोम की मुद्रा को अपनी ओर खींच रहा था, जिससे रोम में आर्थिक संकट की स्थिति पैदा हो गई थी।

2. रोमन मदिरा और एम्फोरा (Wine and Amphorae)

© Association of Academic Researchers and Faculties (AARF)
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

रोमन मदिरा भारतीय राजाओं और अभिजात वर्ग के बीच अत्यंत लोकप्रिय थी। भूमध्यसागरीय क्षेत्र से आने वाली इस मदिरा को विशिष्ट आकार के मिट्टी के बर्तनों में लाया जाता था, जिन्हें 'एम्फोरा' कहा जाता है। अरिकामेडु की खुदाई में इन बर्तनों के हजारों अवशेष मिले हैं, जो यह दर्शाते हैं कि इतालवी और फ्रांसीसी मदिरा उस समय भी भारत में स्टेटस सिंबल थी।

3. अन्य धातुएं और कांच का सामान

भारत में तांबा, टिन और सीसे का आयात किया जाता था, क्योंकि युद्ध सामग्री और बर्तनों के लिए इनकी निरंतर आवश्यकता रहती थी। इसके अलावा, रोम की उन्नत कांच तकनीक से बने रंगीन कांच के बर्तन और मनके भी भारतीय बाजारों में बिकते थे।

4. यवन दास और दासियां

रोमन साम्राज्य से युद्धबंदियों और प्रशिक्षित दासों का भी आयात होता था। यवन युवतियों को अक्सर भारतीय राजाओं के अंतःपुर में परिचारिकाओं के रूप में रखा जाता था, और यवन पुरुषों को उनकी निष्ठा और वीरता के कारण अंगरक्षक (Bodyguards) नियुक्त किया जाता था।

मानसून की खोज और तकनीकी क्रांति (The Hippalus Factor)

- **हिप्पालस की खोज:** 45 ईस्वी के आसपास ग्रीक नाविक हिप्पालस ने मानसून हवाओं (South-West Monsoon) के सीधे मार्ग की खोज की। इससे पहले जहाज तटों के किनारे-किनारे चलते थे, लेकिन अब वे खुले समुद्र से सीधे मुज़िरिस पहुँच सकते थे।
- **जहाज निर्माण तकनीक:** संगम साहित्य (जैसे पट्टिनप्पालाई) में बड़े जहाजों का वर्णन है। यहाँ तुलना करें कि रोमन 'गैली' (Galleys) और भारतीय 'कट्टुमराम' या 'नवाई' में क्या अंतर था।

'यवन' (Yavanas) का सामाजिक और सांस्कृतिक प्रभाव

रोमन व्यापारियों को संगम काल में 'यवन' कहा जाता था।

- **यवन रक्षक**: मदुरै के महलों में यवन अंगरक्षकों (Bodyguards) की नियुक्ति होती थी क्योंकि वे अपनी निष्ठा और शारीरिक बनावट के लिए जाने जाते थे।

© Association of Academic Researchers and Faculties (AARF)

- **यवन बस्तियां:** पुहार और मुज़िरिस जैसे शहरों में 'यवन चेरी' (यवन क्वार्टर) होते थे। यहाँ उनके जीवन स्तर, खान-पान और स्थानीय लोगों के साथ उनके वैवाहिक संबंधों का उल्लेख करें।
- **वास्तुकला:** संगम ग्रंथों में यवन कारीगरों द्वारा बनाई गई मशीनों और प्रकाश स्तंभों (Lighthouses) का जिक्र है।

मुज़िरिस पेपिरस (The Muziris Papyrus) - एक ऐतिहासिक दस्तावेज़

यह विएना म्यूजियम में रखा एक प्राचीन समझौता (Contract) है। यह दो व्यापारियों के बीच का कानूनी दस्तावेज है जिसमें भारत से रोम भेजे जाने वाले सामान (काली मिर्च, कपड़े, हाथीदांत) के बीमा और मूल्य का विवरण है। यह साबित करता है कि उस समय का व्यापार कितना संगठित और कानूनी रूप से मजबूत था।

आर्थिक प्रभाव एवं मुद्रा विनिमय (Economic Impact)

रोमन लेखक 'प्लिनी' ने अपनी पुस्तक नैचुरल हिस्ट्री में दुःख व्यक्त किया था कि रोम का खजाना भारत की विलासिता की वस्तुओं के कारण खाली हो रहा है। दक्षिण भारत में भारी मात्रा में मिले रोमन सोने और चांदी के सिक्के इस बात का प्रमाण हैं कि भारत 'बुलियन' (कीमती धातु) के संचय का केंद्र बन गया था।

निष्कर्ष

संगम कालीन समुद्री व्यापार ने दक्षिण भारत को एक वैश्विक आर्थिक शक्ति के रूप में स्थापित किया। इस व्यापार ने न केवल धन का आगमन किया बल्कि नगरीकरण (Urbanization) को भी बढ़ावा दिया। आदान-प्रदान का विश्लेषण करने पर यह स्पष्ट होता है कि व्यापार का संतुलन पूरी तरह से भारत के पक्ष में था। भारत कच्चा माल और विलासिता का सामान निर्यात कर रहा था, जबकि बदले में वह रोम की ठोस संपदा (सोना-चांदी) प्राप्त कर रहा था। इसी कारण संगम काल को दक्षिण भारत का 'आर्थिक स्वर्ण युग' कहा जाता है। यद्यपि तीसरी शताब्दी के बाद रोमन साम्राज्य के पतन के साथ यह व्यापार धीमा पड़ गया, लेकिन इसने भारतीय नौसैनिक कौशल और व्यापारिक दूरदर्शिता की एक अमिट छाप छोड़ी।

संदर्भ ग्रंथ सूची

© Association of Academic Researchers and Faculties (AARF)

1. शास्त्री, के. ए. नीलकंठ (संपादित): The Periplus of the Erythrean Sea (पेरिप्लस ऑफ द एरिथ्रियन सी) –
2. प्लिनी द एल्डर: Naturalis Historia (नैचुरल हिस्ट्री)
3. चंपकलक्ष्मी, आर. (1996): Trade, Ideology and Urbanization: South India 300 BC to AD 1300 (ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस)
4. वार्मिंगटन, ई.एच. (1928/1974): The Commerce between the Roman Empire and India (विकास पब्लिशिंग हाउस)
5. बेगली, विमला और डे पुमा, रिचर्ड डैनियल (1991): Rome and India: The Ancient Sea Trade (यूनिवर्सिटी ऑफ विस्कॉन्सिन प्रेस)
6. रे, हिमांशु प्रभा (1994): The Winds of Change: Buddhism and the Maritime Heritage of South Asia
7. मैक्क्रेंडल, जे.डब्ल्यू.: Ancient India as Described by Ptolemy
8. गुरुमूर्ति, एस.: Ceramic Traditions in South India
9. टॉमबर, रोबर्टा (2008): Indo-Roman Trade: From Red Sea to the Indus (एन्थम प्रेस)

© Association of Academic Researchers and Faculties (AARF)